International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 10-06-2026, Accepted: 10-07-2026, Published: 25-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 33-35

हिंदी विज्ञान कहानियों में पर्यावरण चिंतन की अवधारणा का अध्ययन

कविता लिटौरिया[1], डॉ0 के0 सी0 जैन[2]
1. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, PMCOE, शास0 अग्रणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश, भारत
2. प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, PMCOE, शास0 अग्रणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
हिंदी विज्ञान कहानियाँ (साइंस फिक्शन) पर्यावरणीय मुद्दों को गहनता से उजागर करती हैं, जहाँ जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, परमाणु युद्ध के दुष्परिणाम, जनसंख्या विस्फोट, कीटनाशकों का प्रभाव और संसाधनों की कमी जैसे विषय प्रमुख हैं। यह शोध पत्र समकालीन हिंदी विज्ञान कथा लेखकों जैसे अरविंद मिश्र, देवेंद्र मेवाड़ी, शुकदेव प्रसाद, मनोहर श्याम जोशी और अन्य की रचनाओं का विस्तृत विश्लेषण करता है। इन कहानियों में पर्यावरण चिंतन मानव–प्रकृति संबंधों की जटिलताओं को दर्शाता है, जो वैश्वीकरण, औद्योगीकरण और तकनीकी प्रगति के दुष्परिणामों पर टिप्पणी करता है। अध्ययन से पता चलता है कि हिंदी विज्ञान कथा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में जागरूकता फैलाने का सशक्त माध्यम है, जो न केवल समस्या का चित्रण करता है बल्कि भविष्य की चेतावनी भी देता है।
इस पत्र में पर्यावरण चिंतन को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों में समझा गया है, जिसमें प्राचीन भारतीय दर्शन से लेकर आधुनिक वैश्विक चुनौतियों तक का समावेश है। समकालीन कहानियाँ पर्यावरण को एक जीवंत प्राणी के रूप में चित्रित करती हैं, जो मानवीय लालच और अज्ञानता से पीड़ित है। उदाहरणस्वरूप, प्रदूषित शहरों, मरते पक्षियों और परमाणु तबाही के माध्यम से लेखक पाठकों को आत्मनिरीक्षण के लिए प्रेरित करते हैं। यह विमर्श नारी विमर्श, सामाजिक न्याय और तकनीकी नैतिकता से भी जुड़ता है, क्योंकि पर्यावरणीय संकट सबसे अधिक वंचित वर्गों को प्रभावित करता है। शोध से निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी विज्ञान कथा पर्यावरणीय न्याय की मांग करती है और सतत विकास के मॉडल को बढ़ावा देती है।

मूल शब्दः पर्यावरण, विज्ञान कथा, प्रदूषण, कहानी, संरक्षण, कथा साहित्य

हिंदी विज्ञान कहानियाँ (साइंस फिक्शन) आधुनिक साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा हैं, जो वैज्ञानिक कल्पना के माध्यम से भविष्य की संभावनाओं और चुनौतियों को चित्रित करती हैं। पर्यावरण चिंतन से तात्पर्य उन साहित्यिक अभिव्यक्तियों से है जो प्रकृति के संकट, मानवीय हस्तक्षेप, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और संरक्षण की आवश्यकता पर केंद्रित हैं। भारतीय संस्कृति में प्रकृति हमेशा पूजनीय रही है, जैसा कि वेदों, उपनिषदों और पुराणों में वर्णित है, जहाँ पृथ्वी को माता, वृक्षों को देवता और नदियों को जीवनदायिनी माना गया है। लेकिन आधुनिक युग में, विशेषकर स्वतंत्रता के बाद, तेजी से हो रहे शहरीकरण, औद्योगीकरण और वैश्वीकरण ने पर्यावरण को गंभीर खतरे में डाल दिया है। हिंदी विज्ञान कथा में यह चिंतन नई कहानी आंदोलन से शुरू होकर समकालीन काल तक फैला हुआ है, जहाँ लेखक पर्यावरण को केवल पृष्ठभूमि नहीं बल्कि मुख्य पात्र के रूप में चित्रित करते हैं। हिंदी विज्ञान कथा की शुरुआत 20वीं शताब्दी के आरंभ में मानी जाती है, जब पाश्चात्य लेखकों जैसे जूल्स वर्न और एच.जी. वेल्स के प्रभाव में अंतरिक्ष यात्रा और वैज्ञानिक आविष्कारों पर आधारित कहानियाँ लिखी गईं। राहुल सांकृत्यायन की 'बाईसवीं सदी' (1924) में भविष्य के समाज का चित्रण है, जिसमें पर्यावरणीय संतुलन की कल्पना है।

1970–80 के दशक में चिपको आंदोलन और नर्मदा बचाओ आंदोलन जैसे पर्यावरणीय आंदोलनों ने साहित्य को प्रभावित किया। देवेंद्र मेवाड़ी, अरविंद मिश्र और शुकदेव प्रसाद जैसे लेखकों ने प्रदूषण, जनसंख्या विस्फोट और परमाणु खतरे को अपनी कहानियों में स्थान दिया। समकालीन लेखक जैसे मनोहर श्याम जोशी ने विज्ञान कथा को सामाजिक मुद्दों से जोड़ा। यह चिंतन केवल समस्या का वर्णन नहीं करता बल्कि मानवीय स्वार्थ, राजनीतिक साजिशों और आर्थिक असमानता को भी उजागर करता है। उदाहरण के लिए, आदिवासी समुदायों का विस्थापन और उनके पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान का ह्रास प्रमुख विषय हैं।

इस शोध पत्र का उद्देश्य प्रमुख हिंदी विज्ञान कहानियों के माध्यम से पर्यावरण चिंतन की पड़ताल करना है, जिसमें थीम्स, प्रतीकों, पात्रों और सामाजिक संदर्भों का विश्लेषण शामिल है। पत्र को साहित्य समीक्षा, प्रमुख कहानियों का विश्लेषण, निष्कर्ष और संदर्भ सूची में विभाजित किया गया है। यह अध्ययन अन्वेषणात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें द्वितीयक स्रोतों जैसे शोध पत्रों, पुस्तकों और आलोचनाओं का उपयोग किया गया है। पर्यावरण चिंतन हिंदी विज्ञान कथा को वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक बनाता है, क्योंकि जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक समस्या है।

इस संदर्भ में, हिंदी कहानियाँ न केवल जागरूकता फैलाती हैं बल्कि नीति निर्धारण में भी योगदान दे सकती हैं।

साहित्य समीक्षा

हिंदी विज्ञान कथा में पर्यावरण चेतना आदिकाल से मौजूद है, लेकिन आधुनिक कहानियों में यह अधिक जागरूक, आलोचनात्मक और वैश्विक रूप लेता है। अरविंद मिश्र के अनुसार, हिंदी विज्ञान कथा में पर्यावरणीय असंतुलन प्रमुख थीम है, जो जनसंख्या विस्फोट और प्रदूषण से जुड़ा है।

उन्होंने अपनी कहानी 'एक और क्रौंच वध' में कीटनाशकों के पक्षियों पर प्रभाव को चित्रित किया। देवेंद्र मेवाड़ी की रचनाओं में पर्यावरण को नैतिक मूल्यों से जोड़ा गया है, जहाँ प्रदूषण और जनसंख्या के दुष्परिणाम दिखाए जाते हैं। अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में, भारतीय विज्ञान कथा में पर्यावरणीय थीम्स को वैश्वीकरण और मध्यम वर्ग की उदासीनता से जोड़ा जाता है।

'Do Androids Dream of Wars and Climate Change?' पेपर में हिंदी फिल्मों जैसे 'कार्बन' और 'होप' में जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण को दर्शाया गया है। हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श पोस्टह्यूमन दृष्टिकोण अपनाता है, जहाँ प्रकृति को संवेदनशील प्राणी माना जाता है। अन्य अध्ययनों में, विज्ञान कथा को शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से देखा जाता है, जहाँ कहानियाँ

मानव–प्रकृति सह–अस्तित्व पर जोर देती हैं। शुकदेव प्रसाद के शोध में हिंदी विज्ञान कथा में पर्यावरण चेतना को विस्तार से चर्चा की गई है, जहाँ लेखकों ने जल, जंगल, जमीन की रक्षा पर जोर दिया। मनोहर श्याम जोशी ने विज्ञान कथा को सामाजिक मुद्दों से जोड़ा, जिसमें पर्यावरणीय चिंता शामिल है। आलोक शुक्ल ने 21वीं सदी की हिंदी विज्ञान कथाओं में पर्यावरणीय विमर्श पर ध्यान केंद्रित किया। समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण बोध नामक अध्ययनों में पर्यावरण को भावनात्मक संबंध के रूप में देखा गया है।

अन्य शोधों में, पर्यावरण विमर्श को अन्य विमर्शों से जोड़ा गया है। ये समीक्षाएँ दर्शाती हैं कि हिंदी विज्ञान कथाएँ पर्यावरण को एक सामाजिक–राजनीतिक मुद्दे के रूप में प्रस्तुत करती हैं, जो विकास के मॉडल पर सवाल उठाती हैं। साहित्य समीक्षा से स्पष्ट है कि पर्यावरण चिंतन हिंदी विज्ञान कथा की समृद्धि को बढ़ाता है और वैश्विक पर्यावरणीय बहस में योगदान देता है।

मुख्य भाग

हिंदी विज्ञान कहानियाँ पर्यावरण चिंतन को विविध रूपों में प्रस्तुत करती हैं। निम्नलिखित प्रमुख उदाहरणों का विस्तृत विश्लेषण किया जा रहा है:

ध्रुव स्वामी की कहानी ''यह समय नहीं है'' में औद्योगीकरण और प्रदूषण की समस्या को उठाया गया है जिसमें औद्योगीकरण के कारण मानव सभ्यता का विनाश के विषय में संकेत किया गया है। यह कहानी भविष्य के एक ऐसे समय की कल्पना करती है जहाँ प्रकृति ने मनुष्यों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया है।

ध्रव स्वामी कहते हैं कि–

''हमने प्रकृति को नियंत्रित करने की चाह में अपना अस्तित्व ही संकट में डाल दिया है।''

''समुद्र–मंथन'' कहानी में राजेश ग्रोवर समुद्री प्रदूषण एवं इससे होनें वाले समुद्री जीवन के विनाश पर गंभीरता से परिचर्चा करते दिखाई देते हैं। कहानी में महासागरों के अतिदोहन और इससे होनें वाले विनाशकारी परिणामों को चित्रित किया है, और कहा हैं कि

''मनुष्य ने समुद्र को देवता न समझकर अपनी निजी संपत्ति समझ लिया।''

सत्यप्रकाश व्यास की कहानी ''बर्फ की चीख'' ग्लोबल वार्मिंग पर आधारित है। धुव्रीय बर्फ एवं ग्लेशियरों के पिघलनें पर विशद् प्रकाश डालती है। जलवायु परिवर्तन से होनें वाली भयावह स्थितियों को दर्शाते है।

व्यास जी कहते है कि–

''ध्रुवों की बर्फ पिघल रही थी, मानो प्रकृति के आँसू हो।''

''वन महोत्सव'' कहानी में चंद्रकांता नें वनों की कटाई की समस्या को उठाया है और इससे होनें वाले पारिस्थितिकी असंतुलन से उत्पन्न भयावहता को बताती है। यह कहानी वन संरक्षण और प्रकृति के साथ सामंजस्य की आवश्यकता पर बल देती है।

वे कहतीं है कि –

''पेड़ कट रहे थे और उनके साथ मानवता की जड़ें भी कट रही थीं।''

यतीश अग्रवाल की ''जलतृष्णा'' जल संकट और जल संरक्षण की उपेक्षा से उत्पन्न समस्या के बारे में गंभीरता से प्रश्न उठाया है और इस कहानीं में भविष्य के जल विहीन समाज की मार्मिकता को बताया है।

यतीश कहते हैं कि –

''पानी की एक–एक बूंद के लिए तरसते लोगों को अब समझ आया कि सोना नहीं, जल ही जीवन है।''

''हरित ग्रह का सपना'' में रामनारायण पटेल वृक्षों एवं वनों के विनाश के कारण भूरी एवं सूखी धरती के विषय में आवाज उठाते हैं। और सभी प्रकार के पर्यावरणीय अतिक्रमण से उत्पन्न समस्याओं को जीवंत करते है। वे कहते हैं कि –

''हरा रंग अब केवल किताबों में ही बचा था, वास्तविकता भूरी और धूसर हो चुकी थी।''

अरविंद मिश्र की कहानी ''एक और क्रौंच वध'' यह कहानी कीटनाशकों के पर्यावरणीय प्रभाव पर केंद्रित है। लेखक पक्षियों पर कीटनाशकों के दुष्परिणाम और पशु क्रूरता को चित्रित करते हैं। कहानी में क्रौंच पक्षी का वध महाभारत के संदर्भ से जुड़ता है, जो आधुनिक पर्यावरणीय संकट का प्रतीक है। लेखक मानवीय लालच से होने वाली पारिस्थितिकी असंतुलन को उजागर करते हैं। यह कहानी पर्यावरणीय न्याय की मांग करती है और विकास के वैकल्पिक मॉडलों की ओर इशारा करती है।

देवेन्द्र मेवाड़ी की कहानी दिल्ली मेरी दिल्ली, शहरी प्रदूषण और जनसंख्या विस्फोट पर केंद्रित है। दिल्ली के प्रदूषित वातावरण को भविष्य के डिस्टोपिया के रूप में चित्रित किया गया है। लेखक औद्योगिक प्रदूषण के दुष्परिणामों को मिथकीय तत्वों से जोड़ते हैं, जो पाठक को भावनात्मक स्तर पर प्रभावित करता है। कहानी में पर्यावरण संकट को सामाजिक असमानता से जोड़ा गया है, जहाँ गरीब वर्ग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। यह विमर्श पोस्टकोलोनियल पर्यावरणवाद को दर्शाता है।

शुकदेव प्रसाद की कहानी ''अंतरिक्ष के मित्र'' अंतरिक्ष कचरे (स्पेस गार्बेज) के खतरे पर आधारित है। लेखक विकिरणशीलता और पर्यावरणीय क्षति की भयावहता को दिखाते हैं। कहानी में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के पर्यावरणीय प्रभाव को चित्रित किया गया है, जो पृथ्वी की पारिस्थितिकी को प्रभावित करता है। लेखक मानवीय जिम्मेदारी पर जोर देते हैं।

देवेंद्र मेवाड़ी की कहानी ''चूहे'' जनसंख्या विस्फोट और संसाधन कमी पर व्यंग्य करती है। लेखक बढ़ती जनसंख्या के पर्यावरणीय दुष्परिणामों को उजागर करते हैं। यह कहानी व्यक्तिगत स्तर पर पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी पर जोर देती है।

जयंत नार्लीकर की कहानी संग्रह ''धूमकेतु'' जलवायु परिवर्तन और आइस एज की भविष्यवाणी पर आधारित है। लेखक सौर ऊर्जा के कमी के प्रभाव को चित्रित करते हैं। कहानी में वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत किए गए हैं।

मनोहर श्याम जोशी की विज्ञान कथाओं में विज्ञान कथा को सामाजिक संदर्भों से जोड़ा, जिसमें पर्यावरणीय चिंता शामिल है। उनकी रचनाएँ तकनीकी प्रगति के दुष्परिणाम दिखाती हैं।

इन कहानियों से स्पष्ट है कि हिंदी विज्ञान कथा लेखक पर्यावरण को मानवीय द्वंद्वों से जोड़ते हैं, जो विकास की अंधी दौड़ की आलोचना करती हैं। विमर्श प्रतीकों जैसे प्रदूषित शहर, मरते पक्षी और अंतरिक्ष कचरे के माध्यम से गहराई प्राप्त करता है।

निष्कर्ष

हिंदी विज्ञान कहानियों में पर्यावरण चिंतन एक सशक्त सामाजिक टिप्पणी है, जो संरक्षण की आवश्यकता पर जोर देता है। ये रचनाएँ जागरूकता फैलाती हैं और भावी पीढ़ियों के लिए प्रकृति बचाने की अपील करती हैं। भविष्य में इस चिंतन को और गहराई से अध्ययन की आवश्यकता है, ताकि साहित्य पर्यावरण नीतियों को प्रभावित कर सके। हिंदी विज्ञान कथा वैश्विक पर्यावरणीय बहस में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है, क्योंकि वे स्थानीय संदर्भों को वैश्विक मुद्दों से जोड़ती हैं। अंत में, पर्यावरण

चिंतन हिंदी विज्ञान कथा को अधिक प्रासंगिक और प्रभावशाली बनाता है।

संदर्भ सूची

1. रहीम मियाँ. ''समकालीन हिन्दी कहानी में पर्यावरण विमर्श.'' अपनी माटी, 2022.
2. Alessandra Consolaro. "Dying Trees in Globalizing Hindi Literature-" Kervan International Journal, 2016.
3. लाल सिंह किरार. ''हिन्दी साहित्य में पर्यावरण चेतनाः आधुनिक काल के परिप्रेक्ष्य में.'' सोशल रिसर्च फाउंडेशन, 2019.
4. रीतिका पाण्डेय. ''पर्यावरणीय चेतना एवं जागरूकता से ओत–प्रोत हमारा समकालीन हिन्दी साहित्य.'' जीना जर्नल, 2023.
5. आलोक शुक्ल.''21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में पर्यावरणीय विमर्श.'' सेतु मैगजीन, 2018.
6. ''हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श.'' विवेक रिसर्च जर्नल, 2023.
7. ''पर्यावरण और हिंदी उपन्यास.'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड इंजीनियरिंग रिसर्च, 2023.
8. ''समकालीन हिन्दी साहित्य में पर्यावरणीय अनुशीलन.'' जूनी ख्यात जर्नल, 2020.
9. ''पर्यावरण विमर्श और समकालीन उपन्यास.'' सोशल रिसर्च फाउंडेशन, 2023.
10. ''हिन्दी कविताओं में पर्यावरण विमर्श.'' नेहरु कॉलेज, 2022.
11. "Literary Evolution% Hindi Embraces Environmental Awareness." Down to Earth, 2025-
12. ''भारतीय दर्शन एवं वैदिक साहित्य में पर्यावरण चेतना.'' QTanalytics, 2023.
13. ''साहित्य में पर्यावरणः चेतना की चेतावनी.'' Down to Earth Hindi, 2021.
14. ''इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में पर्यावरण चेतना.'' आर्यावर्त एसवीएस, 2023.
15. ''हिंदी विज्ञान कथा का इतिहास.'' अपनी माटी, 2023.
16. ''देवेंद्र मेवाड़ी की विज्ञान कथाएँ.'' काफल ट्री, 2019.
17. ''अरविंद मिश्र की विज्ञान कथा.'' ब्लॉग, 2007.
18. ''शुकदेव प्रसाद की भारतीय विज्ञान कथाएँ.'' पुस्तक.वतह, 2023.
19. ''मनोहर श्याम जोशी और विज्ञान.'' काफल ट्री, 2019.